जैविक खेती क्या है?

भारत में आजादी से पहले पारम्परिक खेती जैविक तरीके से ही की जाती थी जिसमे किसी भी प्रकार के रसायन के बिना फसले पैदा की जाती थी| जैविक खेती किसान को आत्मनिर्भर बनाश है और पर्यावरण का संरक्षण भी करती है| यह मृदा और जल संरक्षण के लिए अनिवार्य है | जैविक खेती स्व काम से कम लगत में अधिक से अधिक पैदावार ली जा सकरी है | यह पूर्णतः ज़हर मुक्त खेती है, इससे न किसान के स्वस्थ को नुक्सान होता है और न ही जन जन को.

जैविक खेती के लाभ

I. न्यूनतम बहरी लागत
II. पूरी तरह आर्गेनिक
III. रासायनिक खाद और कीटनाशकों पर निर्भरता ख़त्म
IV. किसान खाद, कीटनाशक इत्यादि स्वयं बना सकते हैं
V. मृदा का स्वस्थ और गुणवत्ता बानी रहती है
VI. मृदा में करबन जमा कर ज़ब्त करने से ग्लोबल वार्मिंग का नियंत्रण होता है
VII. सस्ते और टिकाऊ औजार इस्तेमाल होते हैं
VIII. बीज संरक्षण - स्थानीय बीज जो जल वायु परिवर्तन में भी कारगर सिद्ध है
IX. जल वायु परिवर्तन से बचाव दिल सकता है

भारतीय सांस्कृतिक निधि - नेचुरल हेरिटेज क्रम #1

भारतीय सांस्कृतिक निधि - नेचुरल हेरिटेज डिवीज़न प्राकृतिक विरासत एवमसंसाधनों के संरक्षण के लिए कार्यरत है| हम पर्यावरण की समस्याओं के लिए सुरक्षित एवम काम लगत उपायों को बढ़ावा देते हैं| हमारा कार्य मानव जाती सम्बंधित एवम प्रकृति सम्बंधित मुद्दों पर केंद्रित है |

भूमि हमारी प्रकितिक विरासत है | यह जीवित तत्व है | हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक मिटटी, पानी, एवम वनस्पति को आधार प्रदान करती है | सभी अवश्यल वस्तुओं यथा भोजन, पानी, शरण, एवम मनोरंजन के लिए हम इस पर निर्भर हैं परन्तु फिर भी इस पर बहुत काम ध्यान देते हैं और इसके संरक्षण के उपाय तो नगण्य हैं | स्वस्थ मृदा, स्वस्थ आहार तंत्र का आधार है | कृषि की प्रचलित पद्धत्ति ने मृदा कटाव, उर्वरकता में कमी, भूजल स्तर में कमी, पोषक तत्वों के रिसाव से पारिस्थितिक तंत्र में प्रदुषण, जैवविविधता हास तथा भूमंडलीय ताप में वृद्धि को बढ़ावा दिया है | विभिन प्रकारों जैसे कम्पोस्टिंग, फसल चक्र, मिश्रित खेती से मिटटी की उर्वरकता बढ़ाने पर ज़ोर दिया जाता है | इन विधियों के प्रयोग से वर्त्तमान समय में खाद्य सुरक्षा और कृषि सत्ता को सुनिश्चित किया जा सकता है | सुस्ताइएबिलिटी परंपरागत कृषि उत्पान का एवम पर्यावरण संरक्षण में घनिष्ठ सम्बन्ध है |

हमारे परंपरागत ज्ञान का विस्तार, वर्तम समय की आर्थिक पारिस्थितिक एवम भूमंडलीय ताप की समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराती है |

INTACH

भारतीय सांस्कृतिक निधि

७१, के के बिरला लेन, लोधी एस्टेट
नई दिल्ली ११०००३
फ़ोन: ०११-२४६४१३०४, २४६३२२६७
फैक्स: ०११ २४६११२९०
E-mail: intach@intach.org

जानकारी के लिए संपर्क करें–
डॉ ऋतू सिंह
फ़ोन: ०११-२४६४१३०४ एस्टन. २२८
Email: ritu.singh@intach.org

भारतीय सांस्कृतिक निधि

संरक्षण को समर्पित

जैविक खेती

न्यूनतम बहरी लागत

मृदा संरक्षण

जल संरक्षण

रसायनों पर निर्भरता नहीं

अपना बीज

जैवविविधता संरक्षण

मृदा में कार्बन ज़ब्ती

जलवायु परिवर्तन से बचाव

5 कदम जैविक खेती की ओर

केवल कुछ ही आसान तरीकों तो अपनाने से जैविक खेती की जा सकती है| इन से किसान में आत्मनिर्भरता आएगी, जैविक खेती के मूलतः पांच घटक हैं|

I. **मृदा संरक्षण - खाद निर्माण और आच्छादन**

II. **फसल चक्र और मिश्रित खेती**

III. **बीजोपचार और संरक्षण**

IV. **जल संरक्षण**

V. **पौध संरक्षण**

इन के अलावा कुछ नयी तकनीक भी विकसित की गयी है जिससे अच्छी पैदावार मिलती है और लगत कम लगती है है| सिस्टम ऑफ़ रुट इन्टेन्सिफिकेशन धान, गेहूं, सरसों, मक्का और सब्ज़ी की खेती के लिए उपयोगी है. इस पद्धति से सरसों की खेती छत्तरपुर के गाँधी भवन द्वारा की जा रही है, और पन्ना क्षेत्र में धान और गेहूं की|

मृदा संरक्षण - खाद निर्माण और आच्छादन

रासायनिक खाद और कीटनाशक के निरंतर प्रयोग से मिटटी की उर्वरकता में बहुत कमी आ गयी है, साथ ही भारी मशीनों के उपयोग से मृदा में कठोरता आ गयी है| इसको परिस्थिति में पौधों की जड़ों को बढ़ने व फैलने में कठिनाई होती है| फलस्वरूप पौधों का विकास नहीं हो पता| इस की लिए जैविक खाद (कम्पोस्ट) का प्रयोग ज़रूरी है. इस खाद से मिटटी में न सिर्फ कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि होती है बल्कि जीवाणु भी पनपते हैं. यह जीवाणु मिटटी के तत्वों को पौधों की जड़ों से सोखने लायक बनातेहैं| कम्पोस्ट से मिटटी के बनावट, उसकी पानी सोखने की क्षमता, भूजल संरक्षण, जड़ों के विकास, आदि में बढ़ोतरी होती है. इस से सूखे व बाढ़ की मर से बचा जा सकता है|

इस का एक उदाहरण इस फोट में देखा जा सकता है. सामने वाले खेत में जैविक खाद का इस्तेमाल हुआ है जिस के कारण सतह पर पानी इकट्ठा नहीं है. जबकि पीछे वाले खेत में रासायनिक खाद के चले मृदा कठोर होने से बरसात का पानी सतह पर ही खड़ा है|

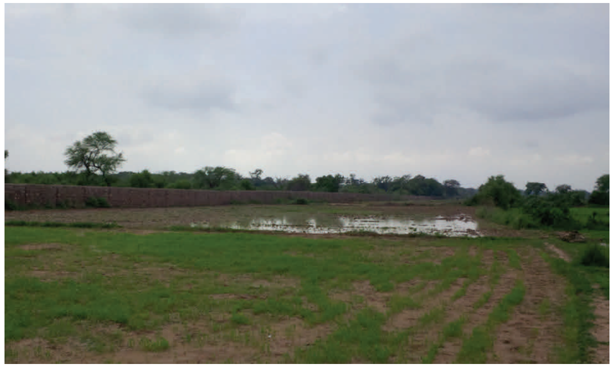

आच्छादन का अर्थ है मिटटी की सतह को ढक कर रखना| खेत में करीब आधा सिंचाई का पानी भाप बन कर उड़ जाता है. अच्छादन से यह पानी संरक्षित होता है| आच्छादन भूमि की नमी बना के राखत है और उसे अधिक या कम तापमान से बचता है| आच्छादन खेत के आस पास के कचरे, फसलों की टहनी इत्यादि से किया जा सकता है|

फसल चक्र और मिश्रित खेती

फसल चक्र मिटटी की गुणवत्ता को बनाने में लाभदायक है| परंपरागत यहाँ पर दाल और कोदो/कुटकी आदि का चक्र कायम किया जाता था | दालें मिटटी में नाइट्रोजन की पूर्ति करती थी जो अगली फसल के काम आती थी. फसल चक्र का एक उदाहरण नीच दिया गया है|

1 खाद खरीफ- उर्द रबी - गेहूं	2 खरीफ - मुंग रबी - जवा
3 खरीफ - तिल रबी - राई	4 रबी - चना

मिश्रित खेती में दो से अधिक फसलें एक साथ खेत में बोई जाती हैं| विभिन फसलें मिटटी से विभिन प्रकार के तत्त्व सोखते हैं. इससे मिटटी में किसी एक तत्त्व के कमी नहीं होती| परंपरागत अरहर (बहु सालिय) के साथ मुंग, उर्द, तिल, कोदो, कुटकी की बुवाई होती थी| खेत की मेढ़ों पर अरंडी और पटसन उगाया जाता था. इस तरह एक ही खेत से अनाज, दाल, तेल, कपडा, रसी सभी सम्म उपलभ्ध होते थे|

बीजोपचार और संरक्षण

उत्पादकता बढ़ाने के लिए उत्तम बीज का होना अनिवार्य है। उत्तम बीजों के चुनाव के बाद उनका उचित बीजोपचार भी जरूरी है क्यों कि बहुत से रोग बीजो से फैलते है। अतः रोग जनको, कीटों एवं असामान्य परिस्थितियों से बीज को बचाने के लिए बीजोपचार एक महत्वपूर्ण उपाय है। अक्सर फफूंद के रोग उनके स्पोर्स से बीज ही में होते हैं| यहाँ से वह खेती में फ़ैल कर नुकसान करते है. यदि गौमूत्र और चुने जैसे संसाधनों से बीजउपचार किया जाये तोह इन रोगों की रोकथाम हो सकती है|

जल संरक्षण

अतिवृष्टि और अनावृष्टि दोनों ही किसान के लिए एक चिंता विषय बने रहते हैं| ईस के लिए पहले जैविक खाद और आच्छादन का प्रयोग करें. बड़े किसान अपने खेत पर तालाब बनवा सकते हैं या गहरी नालियां कुड़वा सकते हैं. इस से पानी का संरक्षण होगा, धरती के भीतर नमी बानी रहेगी जो मिटटी को सजीव रखेगी|

पौध संरक्षण

फसलों में अक्सर बीमारी और कीटों का आक्रमण होता है. इसके बचाव के लिए किसान रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं| यह बाजार से मोल लाना होता है, जबकि किसान अपने ही खेत पर विभिन बिमारियों और कीटों से बचाव के लिए कीटनाशक बना सकते है|

अग्नियास्त्र

पांच से सात प्रकार की कड़वी पत्ती इकठ्ठा कर के बारीक काट लें ; २.५ किलो नीम की पत्ती का पेस्ट बनायें
हरी मिर्च २५० ग्राम का पेस्ट बनायें; लहसुन २५० ग्राम, अदरक २५० ग्राम का पेस्ट बनायें; ५०० ग्राम बेसन को ५ लीटर पानी, ५ लीटर गौमूत्र, ५ किलो गाय का गोबर में मिलाएं | इसमें सभी बारीक कतई हुई कड़वी पट्टी, नीम, हरी मिर्च, लहसुन, व अदरक को मिलाएं और इसे सात दिन रख दें |

उपयोग की विधि–शाम को ५ लीटर पानी में ५०० ग्राम गुड़ मिलाकर इसका पौधों पर छिड़काव करें

प्रातः सूर्योदय से पहले १० लीटर पानी में १ लीटर अग्नियास्त्र मिला कर छिड़काव करें

तीसरे दिन ५ लीटर पानी में १ लीटर मट्ठा मिला कर छिड़काव करें